www.thearyasamaj.org

Vol.10 December'16 No.5
Annual Subscription : Rs 100
Rs 10/- per copy

ब्रह्मार्पण
BRAHMARPAN

वेदोऽखिलो धर्ममूलम्

A Monthly publication of Brahmasha India Vedic Research Foundation

ब्रह्माशा

स्वामी श्रद्धानंद विशेषांक

Brahmasha India Vedic Research Foundation
ब्रह्माशा इंडिया वैदिक रिसर्च फाउन्डेशन

www.thearyasamaj.org

श्रद्धानन्द महान्

–प्रो. सुन्दरलाल कथूरिया

ऋषिवर के पीछे हुए, श्रद्धानन्द महान्।
युगों-युगों तक कर रहा, जग उनका गुणगान।।

जीवन में जो कुछ किया, श्रद्धा उसका मूल।
उत्तरार्द्ध उत्कर्ष कर, की न पुनः कुछ भूल।।

सेवा-व्रत जो है कठिन, ले उसका संकल्प।
जीवन-भर उस पर चले, सोचा नहीं विकल्प।।

दलितों का उद्धार कर, दिया उन्हें नवप्राण।
भटके जन को शुद्ध कर, विधवाओं का त्राण।

धर्मान्तरण जो कर गये, उन्हें बनाया आर्य।
जीवन का यह था मिशन, सारा जग हो आर्य।।

गुरुकुल शिक्षा के लिए, किया सभी कुछ दान।
निर्भय वेद प्रचार कर, किया आत्म-बलिदान।।

पद छोड़े क्षण नहीं लगा, मारी उनको लात।
हिन्दी-हिन्दू के लिए, किया समर्पित गात।।

नारी शिक्षा के लिए, किये प्रयत्न हजार।
माता सुमाता बन सके, वेद पढ़े सुविचार।।

जामा मस्जिद से किया, मंत्रों का उच्चार।
वेद-ज्ञान सब के लिए, भेद-भाव बेकार।।

दान-वृत्ति भी थी प्रबल, लोभ न मन अभिमान।
वेद-विहित जीवन जिया, श्रद्धानन्द महान्।।

जीवन का उद्धार कर, श्रद्धानन्द समान।
सत्संगति पारस मिले, जीवन बने महान्।।

बी-3/79, जनकपुरी, नई दिल्ली110058
मो. 09718479970

www.thearyasamaj.org

Brahmarpan December' 16 Vol. 10 No.5

मार्गशीर्ष-पौष 2073 वि.संवत्

ब्रह्मार्पण
BRAHMARPAN

A bilingual Publication of Brahmasha India Vedic Research Foundation

BRAHMASHA INDIA VEDIC RESEARCH FOUNDATION

C2A/58, Janakpuri,
New Delhi-110058
Tel :- 25525128, 9313749812
*email:*deeukhal@yahoo.co.uk
brahmasha@gmail.com
Website : www.thearyasamaj.org
of Delhi Arya Pratinidhi Sabha

Sh. B.D. Ukhul
Secretary
Dr. B.B. Vidyalankar 0124-4948597
President
Col.(Dr.) Dalmir Singh (Retd.)
V.President
Dr. Mahendra Gupta *V.President*
Ms. Deepti Malhotra
Treasurer

Editorial Board
Dr. Bharat Bhushan Vidyalankar,
Editor
Dr. Harish Chandra
Dr. Mahendra Gupta
Acharya Gyaneshwararya

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्याय क्षेत्र दिल्ली ही होगा।

Printed & Published by
B.D. Ukhul for Brahmasha India Vedic Research Foundation
Under D.C.P.
License No. F2 (B-39) Press/ 2007
R.N.I. Reg. No. DELBIL/ 2007/22062
Price : Rs. 10.00 per copy
Annual Subscription : Rs. 100.00

CONTENTS

1. श्रद्धानंद महान 2
-प्रो. सुन्दरलाल कथूरिया
2. संपादकीय 4
3. सांख्य दर्शन 7
-डॉ. भारत भूषण
4. कैसा हो नववर्ष हमारा 8
-विनोद बंसल
5. मेरे पिता (स्वामी श्रद्धानन्द) के चिर विदाई क्षण 11
(स्वामी श्रद्धानंद जीवन झाँकी)
-पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति
6 सच्ची श्रद्धा के महामानव श्रद्धानन्द
-श्री रामपथिक भिक्षु 18
7. जय बोलो श्रद्धानंद की 20
-सुभाषचन्द्र गुप्त
8. अंधकार में प्रकाशपुंज 21
-सुनीति
9. दिसंबर में शहीद
-डॉ. अशोक आर्य
क. पं. रामप्रसाद 'बिस्मिल' 25
ख. अशफाकउल्ला खाँ 27
ग. गेंदालाल 28
घ. खुदीराम बोस 29
ड. ऊधमसिंह 30
10. Hesitations of History 31
-M.K. Rasgotra
11. A Man (A.B. Vajpayee) of few words who mesmerised all 34
-Vinod Sharma

www.thearyasamaj.org

संपादकीय

दिल्ली में प्रदूषण ने 17 साल का रिकॉर्ड तोड़ा

दिल्ली में इस वर्ष दिवाली से पूर्व ही वातावरण में नमी और ठंडक के कारण धुंध होने लगी थी। दिल्ली के कई प्रदूषण मापक केन्द्रों पर प्रदूषण की मात्रा 5 से 8 गुना अधिक दर्ज की गई। दिवाली के अगले दिन प्रदूषण का स्तर सबसे अधिक पाया गया। इस दिन दिल्ली के दो सिरों दिल्ली विश्वविद्यालय और इंदिरा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर प्रदूषण 2.5 पी.एम. का स्तर 500 एम.जी.सी.एम. से भी अधिक था। यह सामान्य से आठ गुना अधिक है। अगले दो दिनों में इसके और अधिक बढ़कर पी.एम.10 का स्तर 491 एम.जी.सी.एम. रहने का अनुमान है।

दिल्ली तथा आसपास के क्षेत्र इस वर्ष 17 साल के सबसे खतरनाक स्मॉग से जूझ रहा है। पर्यावरण पर नज़र रखने वाली संस्था सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरनमेंट (CSE) की वैज्ञानिक अनुमिता राय चौधरी ने बताया कि इसे हेल्थ इमरजेंसी करार देते हुए दिल्ली सरकार को लोगों से कहना चाहिए कि वे अपने बच्चों को घरों से बाहर न जाने दें। इस धुंध में खुले में व्यायाम न करें। डॉक्टरों की सलाह है प्रदूषण से खाँसी, जुकाम, नज़ला, छाती की जकड़न, बलगम आना जैसी बीमारियाँ बढ़ रही हैं। इतना प्रदूषण पिछले छह साल में पहली बार हुआ है। इसका प्रभाव यातायात संचालन पर पड़ा है।

दिल्ली के बढ़ते प्रदूषण के लिए कौन जिम्मेदार?

दिल्ली में प्रदूषण को बढ़ाने में केवल दिल्ली के लोग ही जिम्मेदार नहीं हैं बल्कि इसके लिए काफी हद तक आसपास के लोगों का भी योगदान है। जैसा कि ऊपर लिखा वातावरण में नमी और ठंडक के कारण जो परिवर्तन होता है वह भी

www.thearyasamaj.org

स्मॉग का कारण है। अलग-अलग स्थानों से अलग तरह के पॉल्यूटेन्ट्स वातावरण में मिल जाते हैं। कुछ कारण नीचे दिये हैं-

1. फसल के अवशेषों को जलानाः-

पंजाब, हरियाणा और आसपास के इलाकों में फसलों के बचे हुए डंठलों के जलाने से दिल्ली की हवा प्रदूषित हो रही है और उसमें 40 प्रतिशत प्रदूषित कण घुल रहे हैं। (पी.एम.2.5,पी.एम.हाइड्रोकार्बन)

2. कारों, मोटर, साइकिलों, बसों, ट्रकों में प्रयुक्त पेट्रोल डीजल के धुएँ से प्रदूषणः-

दिल्ली में चलने वाली कारों और मोटर साइकिलों और बाहर से दिल्ली में आने वाली बसों और ट्रकों में प्रयोग में आने वाले डीजल और पेट्रोल के धुएँ से हवा में प्रदूषित कणों का स्तर बढ़ता है। इनसे प्रदूषण का स्तर 80% तक बढ़ जाता है। इसमें मुख्य रूप से CO (कार्बन मोनोऑक्साइड और हाइड्रोकार्बन होते हैं।)

3. भवन निर्माण और मरम्मत से पैदा हुई धूल से प्रदूषणः-

भवन निर्माण, मरम्मत और तोड़फोड़ से हवा में धूल के कण मिल जाते हैं। गर्मियों में धूलिकणों का प्रदूषण अधिक होता है क्योंकि गरम हवा से वे वातावरण में जल्दी घुल-मिल जाते हैं। गर्मियों में धूल भरी आँधी के कारण भी प्रदूषण अधिक हो जाता है। (पॉल्यूटेंट पी.एम.2.5, पी.एम.10)

4. एयर लॉकः-

वातावरण में मौजूद सभी प्रदूषित कणों का स्तर बहुत अधिक बढ़ जाता है और हवा न चलने से एक ही स्थान पर ठहरकर प्रदूषण को खतरनाक स्तर तक पहुँचा देते हैं। हवा न चलने के कारण प्रदूषण स्मॉग का रूप ले लेता है। (पॉल्युटेंट-पीएम-2.5, पी एम-10 नाइट्रोजन ऑक्साइड NO_2)

5. दिवाली का प्रभावः-

www.thearyasamaj.org

दिवाली पर पटाखों के जलाने से वातावरण में मौजूदा प्रदूषित कण और भी अधिक खतरनाक स्तर पर पहुँच जाते हैं। इस वर्ष पहले ही वातावरण में फसल जलाने से प्रदूषण हो जाने के बाद पटाखों ने प्रदूषण का स्तर और भी बढ़ा दिया। अब दिवाली जैसे त्योहार के स्वरूप का बदलने की आवश्यकता है।

6. फैक्टरियों/पावर हाउसों से प्रदूषणः-

इस वर्ष प्रदूषण के अत्यधिक खतरनाक स्तर पर पहुँच जाने के कारण सरकार ने इसका उपचार करने के लिए कुछ उपाय सोचे हैं।

1. पंजाब और हरियाणा की सरकारों से अनुरोध किया जाएगा कि वे किसानों को फसलों के अवशेषों को जलाने से रोकें।

2. दिल्ली में जिन स्थानों पर अधिक प्रदूषण होता है ऐसे पाँच चुने हुए स्थानों पर एयर फिल्टर लगाए जाएँ। कई विद्यालयों में छुट्टी कर दी गई। छात्र स्कूलों में मास्क पहनकर जाते दिखाई दिए।

3. सड़कों की बड़े वैक्यूम क्लीनरों से सफाई। यह कार्य विशेष रूप से गर्मी के मौसम में किया जाए। बरसात में इसकी आवश्यकता नहीं होगी।

प्रदूषण का कुप्रभाव हमारे शरीर पर भी पड़ता है। इसका सबसे अधिक बुरा असर श्वसन-तंत्र पर होता है। प्रदूषण के कारण फेफड़ों में संक्रमण, दमा, हृदय रोग, ब्रेन स्ट्रोक तथा आँखों में जलन, त्वचा की एलर्जी और इम्यून सिस्टम प्रभावित हो सकता है।

इन दिनों प्रदूषण इतना अधिक हो गया था कि गहरी धुंध छा जाने के कारण दृश्यता (विजिविलिटी) जीरो स्तर पर जा पहुँची। इससे एक दिन बीस कारें भिड़ गईं और यातायात बुरी तरह प्रभावित हुआ और विमानों की बहुत-सी उड़ानें रद्द करनी पड़ीं।

संपादक

www.thearyasamaj.org

सांख्य दर्शन (अध्याय-1, सूत्र-107)

-डॉ. भारत भूषण विद्यालंकार

पूर्व सूत्र के अर्थ की पुष्टि में सूत्रकार अगले सूत्र में एक और हेतु प्रस्तुत करता है; सूत्र है-

अधिष्ठानाच्चेति।।107।।

अर्थ- (च) और (अधिष्ठानात्) अधिष्ठान से

भावार्थ- जितना भी त्रिगुणात्मक अचेतन जगत् है उसका कोई दूसरा चेतन अधिष्ठाता होता है जो अचेतन में प्रवृत्ति आदि का हेतु होता है। जैसे रथ आदि अचेतन की प्रवृत्ति का हेतु सारथी अधिष्ठाता होता है, वैसे ही बुद्धि से लेकर स्थूलभूत निर्मित शरीर तक जितना यह संघात है इसमें प्रवृत्ति का हेतु कोई चेतन अधिष्ठाता होना चाहिए, वह जीवात्मा है अधिष्ठाता एक चेतन है, वैसे ही संपूर्ण अचेतन प्रकृति का एक चेतन अधिष्ठाता होना चाहिए क्योंकि शरीर का अधिष्ठाता आत्मा अल्पज्ञ व अल्पशक्ति होने के कारण सारी प्रकृति का अधिष्ठाता नहीं हो सकता फिर अनन्त होने के कारण यह व्यवस्था संभव नहीं है। इनमें से कौन-सी आत्मा प्रकृति की अधिष्ठाता है? यह प्रश्न होगा। इसलिए सारे संसार का एक अधिष्ठाता परमात्मा है। इस प्रकार जीवात्मा और परमात्मा-चेतनमात्र का अस्तित्व इन हेतुओं से सिद्ध होता है। चेतन-सिद्धि के प्रसंग में यहाँ प्रथम हेतु इकतीसवें सूत्र का संग्रह मात्र है। जो जीवात्म-चेतन के अस्तित्व को सिद्ध करता है। इस प्रसंग मुख्य दो हेतु जिनको प्रथम प्रस्तुत किया गया है, वे चेतन मात्र (जीवात्मा और परमात्मा दोनों) के अस्तित्व को सिद्ध करते हैं तथा अन्तिम दोनों हेतु (सूत्र-108, 109) केवल जीवात्मा चेतन के अस्तित्व को। इस विशेषता का संकेत करने के लिए सूत्रकार ने 'च' और 'इति' इन दो पदों का निर्देश किया है। प्रथम पद परमात्मा की सिद्धि में द्वितीय हेतु का संग्रह करता है और दूसरा पद इन दो हेतुओं के द्वारा उक्त अर्थ की सिद्धि की समाप्ति को बताता है।।107।।

दी हिबिस्कस,
बिल्डिंग-5, एपार्ट नं.-9बी
सेक्टर-50, गुड़गाँव (हरियाणा) 122009
फोन-0124-4948597

www.thearyasamaj.org

कैसा हो नव वर्ष हमारा

-विनोद बंसल

अभी हाल ही में एक खबर आई कि क्रिसमस व नए साल के जश्न में सराबोर कुछ युवक गाजियाबाद की सड़कों पर हुडदंग करते हुए पकड़े गए। बताया गया कि पकड़े गए सभी युवक अच्छे घरों से सम्बन्ध रखते हैं। बारहवीं कक्षा से लेकर एम.बी.ए. डिग्रीधारी 22 से 25 वर्ष के ये छात्र शराब के नशे में धुत्त होकर सड़क पर बेहद खतरनाक स्टंटबाजी कर राहगीरों की जान को तो जोखिम में डाल ही रहे थे साथ ही तेज आवाज़ में संगीत बजाकर युवतियों पर फब्तियाँ भी कस रहे थे। अंग्रेजी कलेंडर के प्रथम दिवस यानि एक जनवरी के आने के एक सप्ताह पहले से ही क्रिसमस व नए साल के आगमन की तैयारियों का जोश चारों ओर नजर आने लगता है। इस जोश में अधिकतर लोग अपना होश भी खो बैठते हैं। करोड़ों रुपए नव वर्ष की तैयारियों में लगा दिए जाते हैं। होटल, रेस्तराँ, पब इत्यादि अपने-अपने ढंग से इसके आगमन की तैयारियाँ करने लगते हैं। 'हैप्पी न्यू ईयर' के बैनर, होर्डिंग, पोस्टर व कार्डों के साथ दारू की दुकानों की भी खूब चाँदी कटने लगती है। कहीं कहीं तो जाम से जाम इतने टकराते हैं कि मनुष्य-मनुष्यों से तथा गाड़ियाँ-गाड़ियों से भिड़ने लगती हैं और घटनाएँ दुर्घटनाओं में बदलने में देर नहीं लगती। रात-रातभर जागकर नया साल मनाने से ऐसा प्रतीत होता है मानो सारी खुशियाँ एक साथ आज ही मिल जायेंगी। हम भारतीय भी पश्चिमी अंधानुकरण में इतने सराबोर हो जाते हैं कि उचित-अनुचित का बोध त्याग अपनी सभी सांस्कृतिक मर्यादाओं को तिलांजलि दे बैठते हैं। पता ही नहीं लगता कि कौन अपना है और कौन पराया। क्या यही है हमारी संस्कृति या त्योहार मनाने की परम्परा।

www.thearyasamaj.org

जिस प्रकार ईस्वी सन् का सम्बन्ध ईसाई जगत से है उसी प्रकार हिजरी सन् का सम्बन्ध मुस्लिम जगत से है। किन्तु सूर्योदय से ब्रह्मा जी ने जगत की रचना की। भगवान श्रीराम, चक्रवर्ती सम्राट् विक्रमादित्य व धर्म राज युधिष्ठिर का राज्याभिषेक भी इसी दिन हुआ था। आर्य समाज स्थापना दिवस, सिख परंपरा के द्वितीय गुरु अंगददेव, संत झूलेलाल, व राष्ट्रीय स्वंय सेवक संघ के संस्थापक डॉ. केशव राव बलीराम हैडगेवार का जन्म भी प्रतिपदा के दिन ही हुआ था। यदि हम इस दिन के प्राकृतिक महत्त्व की बात करें तो वसंत ऋतु का आरंभ प्रतिपदा से ही होता है जो उल्लास, उमंग, खुशी तथा चारों तरफ पुष्पों की सुगंधि से भरी होती है। फसल पकने का प्रारंभ यानि किसान की मेहनत का फल मिलने का भी यही समय है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार इस दिन नक्षत्र शुभ स्थिति में होते हैं अर्थात् किसी भी कार्य को प्रारंभ करने के लिए लिए शुभ मुहूर्त होता है।

क्या एक जनवरी के साथ ऐसा एक भी प्रसंग जुड़ा है जिससे राष्ट्र-प्रेम, स्वाभिमान या श्रेष्ठ होने का भाव जाग सके? मैकाले की अंग्रेजी शिक्षा-पद्धति का ही नतीजा है कि आज हम न सिर्फ अंग्रेजी बोलने में हिन्दी से ज्यादा गर्व अनुभव करते हैं बल्कि अपने प्यारे भारत का नाम संविधान में "इंडिया दैट इज भारत" तक रख दिया। इसके पीछे यही धारणा थी कि भारत को भूल कर इंडिया को याद रखो क्योंकि यदि भारत को याद रखोगे तो भरत याद आएँगे, शकुन्तला व दुष्यन्त याद आएँगे, हस्तिनापुर व उसकी प्राचीन सभ्यता और परम्परा याद आएगी।

राष्ट्रीय चेतना के ऋषि स्वामी विवेकानन्द ने कहा था- "यदि हमें गौरव से जीने का भाव जगाना है, अपने अन्तर्मन में राष्ट्र भक्ति के बीच को पल्लवित करना है तो राष्ट्रीय तिथियों का आश्रय लेना होगा। गुलाम बनाए रखने वाले परकीयों के दिनांकों पर आश्रित रहने वाला अपना आत्म

www.thearyasamaj.org

गौरव खो बैठता है।"

इसी प्रकार महात्मा गाँधी ने 1944 की हरिजन पत्रिका में लिखा था "स्वाराज्य का अर्थ है स्व-संस्कृति, स्वधर्म एवं स्व-परम्पराओं का हृदय से निर्वाह करना। पराया धन और पराई परम्परा को अपनाने वाला व्यक्ति न ईमानदार होता है न आस्थावान।"

आवश्यक है कि हम अपने नववर्ष का उल्लास के साथ स्वागत करें न कि अर्ध रात्रि तक मद्यपान कर हंगामा करते हुए, नाइट क्लबों में अपना जीवन गुजारें। यदि इस तरह का जीवन जीते हुए, हम लोग उन्मत्त होकर अपने ही स्वास्थ्य, धन-बल और आयु का विनाश करते हुए नववर्ष के स्वागत का उपक्रम करेंगे, तो यह न केवल स्वयं के लिए बल्कि, अपनी भावी पीढ़ी के लिए भी घातक होगा।

नव वर्ष सूरज की पहली किरण का स्वागत करके मनाया जाता है। नववर्ष के ब्राह्ममुहूर्त में उठकर स्नान आदि से निवृत्त होकर पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य आदि से घर का वातावरण सुगंधित कर दिया जाता है। जो सूर्योदय की पावन वेला में अग्नि में आहुति देकर यज्ञ करके पुरुषार्थ का आरम्भ करते हैं, वे जीवन में समृद्धि के उपभोक्ता होते हैं। हमें देव आराधना के बाद अपने माता-पिता, संतों, आचार्यों व बड़ों को प्रणाम करना चाहिए। इसके उपरान्त सभी एक दूसरे को तिलक लगाते हैं और मिठाइयाँ बाँटते हैं।

हम नववर्ष के दिन कुछ ऐसे कार्य कर सकते हैं, जिनसे समाज में सुख, शान्ति, पारस्परिक प्रेम तथा एकता के भाव उत्पन्न हों।

आइये! विदेशी दासत्व को त्याग कर स्वदेशी अपनाएँ और गर्व के साथ भारतीय नववर्ष यानि विक्रमी संवत् को ही मनाएँ तथा इसका अधिक से अधिक प्रचार करें।

-329, संत नगर, पूर्वी कैलाश,
नई दिल्ली-110065

www.thearyasamaj.org

मेरे पिता (स्वामी श्रद्धानन्द) के चिर विदाई क्षण
(स्वामी श्रद्धानन्द जीवन झाँकी)

-पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति

स्वामी श्रद्धानन्द का जन्म 1854 में जालंधर के तलवन गाँव (पंजाब) में लाला नानकचन्द के पुत्र के रूप में हुआ था। उनका पूर्व नाम मुंशीराम था। महर्षि स्वामी दयानन्द एवं उनके ग्रंथ 'सत्यार्थप्रकाश' के सम्पर्क ने उन्हें आर्य समाज के सिद्धान्तों का कट्टर समर्थक बना दिया। कन्या महाविद्यालय जालंधर मुंशीराम की ही देन है। सन् 1890 के बाद आर्य समाज पर ब्रिटिश सरकार ने अनेक अभियोग लगाये क्योंकि आर्य समाज देश और राष्ट्र पर प्राण न्यौछावर करने की शिक्षा देता था। 1902 में मुंशीराम ने गुरुकुल काँगड़ी की नींव डाली। गुरुकुल काँगड़ी पर ब्रिटिश सरकार की कुदृष्टि बनी रहती थी। 1917 में मुंशीराम ने संन्यासाश्रम में प्रवेश किया। अब वह मुंशीराम से स्वामी श्रद्धानन्द बने। 1919 में रॉलेट एक्ट का विरोध करते हुए स्वामी श्रद्धानन्द खुलकर ब्रिटिश सरकार के विरोध में खड़े हो गये। 30 मार्च, 1919 को दिल्ली में रोलेट एक्ट का विरोध करते हुए जुलूस पर पुलिस ने बन्दूकें तान दीं। तब वह सीना तान कर बन्दूकों के आगे खड़े हो गए और बोले, 'यदि छेदना ही है तो पहले मेरा सीना छेदिये।' तुरन्त बंदूकें झुक गईं। इसी भारतीय संत ने दिल्ली की जामा मस्जिद से वेद मंत्रों का उच्चारण करते हुए ब्रिटिश सरकार को ललकारा था। सूरत, मुम्बई व अहमदाबाद आदि शहरों में उनके ब्रिटिश सरकार विरोधी व्याख्यानों ने धूम मचा दी। 1922 में अमृतसर के अकाल तख्त से भाषण के समय उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। एक वर्ष 4 माह की जेल भी काटी। स्त्री शिक्षा, अछूतोद्धार व राष्ट्रीय एकता के प्रयासों ने उन्हें राष्ट्रीय संत बना दिया। एक

www.thearyasamaj.org

मजहबी उन्मादी की गोली का शिकार होकर 23 दिसम्बर, 1926 को उन्होंने भारतीय संस्कृति की वेदी पर अपने जीवन की आहुति दे दी।

सर्वप्रथम मैं दो-तीन आपबीती चीज़ें पाठकों को सुना देना चाहता हूँ। जिस समय इधर अब्दुल रशीद अपनी मूर्खता-भरी चेष्टा से इस्लाम के माथे पर कलंक का टीका लगा रहा था, उधर गोहाटी में अखिल भारतीय राष्ट्रीय महासभा के अधिवेशन की तैयारियाँ हो रही थीं। स्वागताध्यक्ष महोदय ने पिता जी को एक निजी पत्र लिखकर विशेष आग्रह से महासभा अधिवेशन में निमंत्रित किया था। उस पत्र का उत्तर पिताजी की आज्ञा से मैंने ही दिया था। उसमें अस्वस्थता के कारण न जा सकने पर दुःख प्रकट करते हुए अधिवेशन की सफलता के लिए ईश्वर से प्रार्थना की गई थी। पत्र पहुँचने पर स्वागताध्यक्ष ने एक तार द्वारा सन्देश की प्रार्थना की। वह सन्देश का तार भी पिताजी के आदेश के अनुसार मैंने ही लिखा था।

"On Hindu-Muslim unity depends future wellbeing of India."

अर्थात् 'भारत का भावी सुख हिन्दू-मुस्लिम एकता पर आश्रित है।'

यह संदेश निमोनिया की उग्र दशा में प्रभात की शान्त वेला में बीमार की चारपाई पर से लिखवाया गया था। इस कारण मान लेना चाहिए कि यह सन्देश देने वाले की अन्तरात्मा का सन्देश था। वे हिन्दू-मुस्लिम एकता के कट्टर पक्षपाती थे, परन्तु साथ ही उनका यह भी विश्वास था कि वह एकता तब तक जन्म नहीं ले सकती, जब तक हिन्दू जाति के निर्बल हिन्दू सबल मुसलमानों के मित्र नहीं बन सकेंगे। इस कारण वे हिन्दूओं को मुसलमानों के समान मित्र बनाने के पक्षपाती थे। उनके हिन्दू-संगठन का अभिप्राय मुस्लिम-विरोधी नहीं था अपितु जाति के आंतरिक दोषों को दूर करना था।

मनुष्य के लिए सबसे कठिन काम अपनी भावनाओं का ठीक विश्लेषण करना है। एक प्रसिद्ध लेखक ने लिखा है

कि प्रत्येक व्यक्ति के लिए दूसरे व्यक्ति का मन एक बन्द कमरा है, जिसके अन्दर की असली दशा का वह केवल अनुमान लगा सकता है।

यही कारण है कि मुझसे जब एक मित्र ने पूछा कि स्वामी जी का बलिदान हुआ, तब आपको कैसा अनुभव हुआ? मैं बहुत देर तक चुप रह कर सोचता रहा कि क्या उत्तर दूँ। समाचार सुनने का पहला असर मुझ पर यह हुआ कि ठीक परिस्थिति जानने की इच्छा पैदा हुई। यों दुर्घटना का समाचार मुझे बिलकुल आकस्मिक या अनहोना प्रतीत नहीं हुआ। मानों किसी इस प्रकार के समाचार की तो प्रतीक्षा ही थी। इसके दो कारण थे। पहला कारण यह था कि लगभग दो वर्ष से पिताजी को मुसलमान समाचार पत्रों में छपी हुई और डाक द्वारा बिना नाम के खुली हुई धमकियाँ दी जा रही थीं। शुद्धि-सभा का प्रधान पद स्वीकार कर लेने के कारण धर्मान्ध मुसलमानों में पिताजी के प्रति क्रोध की भावना उत्पन्न की जा रही थी, जिसका प्रकाशन धमकियों के रूप में होता रहता था। इस असन्तोषाग्नि पर उन दिनों चलाये गए प्रसिद्ध शान्तिदेवी केस ने घी का काम दिया। केस चोटी से एड़ी तक बनावटी था। अंसारी बेगम (शान्तिदेवी) को दिल्ली लाने, वनिता-आश्रम में प्रविष्ट कराने या धर्म-परिवर्तन कराने में पिताजी या अन्य किसी हिन्दू या आर्य कार्यकर्ता का हाथ नहीं था, परन्तु दिल्ली के कुछ मुसलमानों ने शान्तिदेवी के पिता और मुसलमान पति को प्रेरणा देकर बिल्कुल झूठा मुकद्दमा दायर करवा दिया, जिसकी दो-तीन पेशियों में ही असलियत प्रकट हो गई, और हम लोगों की निर्दोषता का अदालत ने फैसला कर दिया, परन्तु अदूरदर्शी मदान्ध लोगों ने जो विष बिखेरा था, वह अपना काम कर गया। नासमझ मुसलमानों का पिताजी के प्रति विद्वेष-भाव चरम सीमा तक पहुँच गया।

परिणाम यह हुआ कि वायुमण्डल सन्देह और आशंका से भर गया। पिताजी के मन में खतरे की धमकी से सदा उलटी ही प्रतिक्रिया उत्पन्न होती थी। वे खतरे से डरने की

जगह, खतरे का सामना करने और उस पर हावी होने के लिए तत्पर हो जाते थे। हम लोगों की चिन्ता या सावधानता उन पर कोई प्रभाव नहीं डालती थी। कभी-कभी जब उन्हें सन्देह हो जाता था कि लोगों ने उनकी संरक्षता के लिए पहरा लगाया है, तो रात के समय चुपचाप अकेले बाज़ार में घूमने के लिए निकल जाते थे और लालकुआँ, सदर बाजार आदि प्रमुख मुसलमान हिस्सों का चक्कर काट आते थे। इन सब कारणों से हम लोग सदा शंकित रहते थे। कब क्या अनहोनी हो जाए, इसकी मानो प्रतीक्षा करते रहते थे। सो जब दुर्घटना का पहला समाचार मिला तो ऐसा अनुभव हुआ, जैसे जो होनी थी, वह होकर रही।

एक और भी बात थी, जिसने हमारे हृदयों को इस दुर्घटना के लिए तैयार सा कर दिया था। अपने सदा के स्वभाव के सर्वथा विपरीत लगभग एक मास से पिताजी शरीर-त्याग की चर्चा किया करते थे। यों स्वभाव से वह घोर आशावादी थे, जैसा कि एक कट्टर आस्तिक को होना चाहिए; परन्तु बलिदान के लगभग एक घण्टा पूर्व ही उनकी बातचीत का रुख बदल गया था। मैंने उनकी बड़ी-बड़ी बीमारियाँ देखी थीं। वे कभी हारी हुई बात नहीं करते थे। हारी हुई बात करने वाले को ढांढस देकर कहा करते थे, 'तुम चिन्ता क्यों करते हो? अभी धर्म की सेवा के लिए मेरे शरीर की आवश्यकता है, उसकी रक्षा परमात्मा करेगा।' 1926 के अन्त में अब उन पर निमोनिया का आक्रमण हुआ, उससे पूर्व ही उनकी भाषा में परिवर्तन आ गया था। नवम्बर के अन्त में वह लाहौर गए और गुरुदत्त-भवन में व्याख्यान दिया। सुनने वाले बतलाते हैं कि उस व्याख्यान में उन्होंने यह भाव स्पष्ट रूप से व्यक्त किया था कि संभवतः लाहौर में उनका यह व्याख्यान अंतिम है। उन्होंने दो-तीन अन्य व्याख्यानों में भी यही भाव प्रकट किया था।

रोगी होने पर तो वह प्रायः नित्य ही ऐसी बात करते थे, यों भाषा में कुछ भेद आ गया था।

बलिदान से दो दिन पूर्व व्याख्यान-वाचस्पति पण्डित दीनदयाल

जी शास्त्री आपका स्वास्थ्य-समाचार पूछने आये। कुशल-समाचार पूछने पर आपने कहा – "डॉक्टर कहते हैं, अच्छा है।" शास्त्री जी ने मुस्कुरा कर पूछा "आपकी क्या सम्मति है?" पिताजी ने उत्तर दिया "मेरी तो अब जीने की इच्छा नहीं है।"

इस पर शास्त्री जी ने कहा "स्वामी जी, मुझ से मालवीय जी एक-डेढ़ वर्ष बड़े हैं, और आप उनसे एक वर्ष बड़े हैं। अभी हम लोगों को बहुत सा काम करना है। आप क्यों इतनी जल्दी मोक्ष की तैयारी करने लगे। अब तो आप ठीक हो जाएंगे।

पिताजी ने उत्तर दिया "पण्डित जी, इस समय मुझे मोक्ष की इच्छा नहीं, मैं तो चोला बदलकर दूसरा शरीर धारण करना चाहता हूँ। अब यह शरीर सेवा के योग्य नहीं रहा। इच्छा है, फिर भारतवर्ष में ही पैदा होकर फिर इसकी सेवा करूँ।"

22 दिसम्बर के प्रातःकाल 5 बजे के लगभग पिताजी का सेवक धर्मसिंह मुझे घर बुलाने आया था। उसी समय डॉ. सुखदेव जी को और लाला देशबन्धु जी को भी बुलाया गया था। हम सब के एकत्र हो जाने पर पिताजी ने कहा "भाई, मेरी वसीयत लिखा लो। इस शरीर का कुछ भरोसा नहीं। कब क्या हो जाए, यह भगवान् के सिवाय किसी को पता नहीं।"

उस दिन पिताजी की तबियत काफी अच्छी समझी जा रही थी। डॉ. अन्सारी ने पहले दिन कहा था कि अब कोई खतरा नहीं रहा। डॉ. सुखदेव जी ने निवेदन किया कि अब चिन्ता या घबराहट की कोई बात नहीं। आप शीघ्र ही बिल्कुल ठीक हो जाएँगे। हम लोग भी इस निवेदन में शामिल हो गए, और यह समझकर कि वसीयत लिखने का पिताजी के दिल पर बुरा असर न हो, लिखने में आनाकानी करने लगे। पिताजी इस बात से कुछ खिन्न-से हो गए और कहा "अच्छा भाई, तुम्हारी मर्जी, पर मैं जो कुछ चाहता हूँ, वह सुन लो। जब चाहो, तब लिख लेना।" हम लोग सुनने लगे। उस समय हम लोग चर्म के चक्षुओं से देखते थे और पिताजी ज्ञान के चक्षुओं से, अन्यथा हमसे ऐसी हिमाकत-भरी

भूल न होती कि हमने उस समय की बातों को पूरी तरह हृदयंगम नहीं किया। पीछे से स्मृति को ताज़ा करने पर निम्नलिखित बातें ध्यान में आईं आपने अपनी निम्नलिखित इच्छाएँ प्रकट की थी।

1. मैं आर्यसमाज का इतिहास लिखना चाहता था। नहीं लिख सका, इन्द्र उसे लिख कर पूरा कर दे।

2. 'तेज' और 'अर्जुन' पत्र मेरी भावना के अनुसार चलते रहें।

3. गुरुकुल की रक्षा की जाए।

23 दिसम्बर को बलिदान से कुछ ही समय पहले शुद्धि-सभा के प्रधान सर राजा रामपाल सिंह के स्वास्थ्य सम्बन्धी तार के उत्तर में पिताजी ने जो तार दिलवाया था उसमें लिखा था कि अब तो यही इच्छा है कि दूसरा शरीर धारण कर इस जीवन के अधूरे काम को पूरा करुँ।

यही कारण था कि जब मुझे जीवनलाल जी ने स्वामी जी पर गोली चलने का समाचार दिया, तब वह आकस्मिक नहीं प्रतीत हुआ। सुनकर ऐसे अनुभव हुआ कि यह तो होने वाला ही था, पर हुआ कैसे? अभी तो हम लोग उठकर आये हैं। इतने में क्या हो गया?

जाकर देखा तो किंकर्तव्यता सामने आ गई। ध्यान उस ओर चला गया। शहर में बलिदान का समाचार हवा की तरह फैल गया और श्रद्धानन्द बाजार में भीड़ इकट्ठी होने लगी। हरेक के दिल में दुःख था और आँखों में जोश। जिसे देखता, वह इतना प्रभावित दिखाई देता कि जितना कोई सम्बन्धी भी नहीं हो सकता। मैं उस समय अपने को विशेष रूप से दुखी कैसे समझ लेता! मैं उनका पुत्र था, पर अन्य लोग उनकी स्मृति पर मुझसे बढ़कर दावा कर रहे थे। अनुभव होता था कि सारी दुनिया मेरे साथ संवेदना प्रकट करना चाह रही हैं, और मेरी अपेक्षा भी मुझ से अधिक वेदना प्रकट करना चाहती है। इस कारण मैं संवेदना का पूरा अनुभव नहीं कर सका और न उसे प्रकट ही कर सका।

www.thearyasamaj.org

इस सहानुभूति की भावना के साथ एक और चीज़ भी मिल गई। स्वभावतः मुझे अनुभव हुआ कि यह बड़ा भारी बलिदान था। जैसी कहानियाँ और घटनाएँ इतिहास में पढ़ते आये थे, यह तो वैसी ही हो गई। मेरे पिताजी शहीद हो गए, वे अमर पदवी को प्राप्त हो गए, इस विचार ने मेरे दिल को भर दिया। इसे मनोविज्ञान के पण्डित किस दृष्टि से देखेंगे, शायद वे मेरी भावना को क्षुद्र ही समझेंगे, यह सम्भावना होते हुए भी यह स्वीकार कर लेने में मुझे संकोच नहीं कि इस विचार ने मेरे हृदय में अभिमानमिश्रित सन्तोष की बाढ़-सी ला दी। परिणाम यह हुआ कि जब तक वह दिल्ली के इतिहास में स्मरणीय अर्थी का जलूस निगम बोध घाट पर पहुँचकर, दाहक्रिया करके वापिस नहीं आ गया, तब तक मैं बिल्कुल स्थिर रहा। शायद मुझसे मिलने वाले मेरी उस स्थिरता से आश्चर्यचकित होते होंगे। या तो उसे वे मेरी दृढ़ता का प्रमाण मानते होंगे अथवा हृदयहीनता का। वस्तुतः दोनों ही बातें नहीं थीं। वह स्थिरता उन परिस्थितियों का परिणाम थीं जिनका मैंने ऊपर वर्णन किया है।

मैंने स्वयं इस बात को तब अनुभव किया, जब यमुना के तट से लौटकर और सहानुभूति प्रकट करने वाले मित्रों से अवकाश पाकर मैं अकेला अपने लिखने के कमरे में पहुँचा। कमरे में मेरी बैठने की कुर्सी के ऊपर पिताजी का बड़ा चित्र था (अब वह मेरी कुर्सी के सामने रखा हुआ है) और मैं था। उस समय एकदम मैंने अनुभव किया कि मैं अकेला रह गया। मेरे बड़े भाई पहले ही विलायत जाकर लापता हो चुके थे, पिताजी चले गए (और अब इस तूफानी दुनिया में) आकाश और पृथ्वी के बीच में मैं अकेला लटकता रह गया, मन में यह भाव आते ही मेरा वह कृत्रिम धर्म और स्थिर भाव जाता रहा और आँसू मानो बाँध तोड़कर बह निकले। मैं बहुत देर तक, और आवाज के साथ रोया, यह मुझे भली प्रकार याद है।

www.thearyasamaj.org

सच्ची श्रद्धा के महामानव स्वामी श्रद्धानन्द

-श्री रामपथिक भिक्षु

अंधश्रद्धालु कहीं का रहता नहीं, तो सच्चा श्रद्धालु कहाँ से कहाँ पहुँच सकता है, इसकी सीमा नहीं है। हाँ इस मायावी जगत् में ऐसे श्रद्धालु की परीक्षाएँ भी खूब होती है। इनमें खरा उतरता है मुंशीराम जैसा ही।

बालक मुंशीराम बचपन से मननशील था। पहले महात्मा मुंशीराम, फिर स्वामी श्रद्धानंद।

श्रद्धा से जलती अग्नि है,
श्रद्धा से होता हवि दान।
भौतिक धन से बड़ी है,
श्रद्धा से ही मिलते भगवान्।

श्रद्धा वह गुलाब का पुष्प है, जिसकी महक से महकता है वायुमंडल, जबकि खिलता है काँटों भरी टहनी पर। राह पर फूल बिखेरना तथा मार्ग से काँटे चुगना। कुछ क्या, अधिकतर व्यक्ति काँटे बिखेरते हैं, परन्तु मुंशीराम से बने श्रद्धानन्द ने काँटे चुगना ही अपनाया था।

महर्षि दयानन्द के पहले ही व्याख्यान ने जादू-सा कर दिया था, जबकि सुनने का मन भी न था; बस पूज्य पिता की आज्ञा थी, जब कहता था कि संस्कृत बोलने वाले साधु तो पाखंडी ढोंगी हैं। उन दिनों अंग्रेजी के नावेल पढ़ता था युवा मुंशीराम। उठती जवानी के संग कोतवाल का बेटा होने के कारण जहाँ मटरगश्ती करता, तो माँस, शराब आदि अनेक बुराइयों में ग्रस्त था मुंशीराम।

मुंशीराम के हृदय पटल पर महर्षि का प्रभाव पड़ा, तो सोचा कि इस साधु की दिनचर्या भी गहराई से देखनी चाहिए कि इसकी कथनी और करनी एक है या नहीं? ठान ली परीक्षा लेने की।

प्रातःभ्रमण को जाते हैं महर्षि, तो 4 बजे जिस ओर जाते थे, उस मार्ग पर पहुँचे। ठीक समय भेंट हुई। चाल तेज थी, आगे था तिराहा। किस ओर गये, पता न लगा। अगले दिन तिराहे

www.thearyasamaj.org

पर जा खड़े हुए। मिलने पर तेज चलने लगे। दूरी बढ़ने के कारण फिर दौड़ कर पीछा किया। साँस फूला, परन्तु धुन के धनी ने हिम्मत न हारी। प्रातः की दिनचर्या थोड़ी दूरी से देखता रहा मुंशीराम।

व्याख्यान के बाद समय माँग कर शंकाओं का निवारण किया, तो श्रद्धा बढ़ी। परन्तु मन मस्तिष्क पर जो संस्कारोंवश नास्तिकता के बादल पूर्णता से न छटे तो श्री चरणों से कहा खुले मन से : 'आप पर श्रद्धा हुई, परन्तु ईश्वर पर क्यों नहीं श्रद्धा हो रही मेरी?'

महर्षि दयानन्द का दो टूक उत्तर था; 'तुम ने सवाल किये, मैंने जवाब दिये। कब कहा था मैंने तुमसे ईश्वर दर्शन कराने और श्रद्धा बढ़ाने को? ईश्वर की जब तुम पर स्वतः कृपा होगी, तभी सच्ची श्रद्धा होगी। फिर साक्षात्कार अंतरात्मा में निरन्तर करते रहो अभ्यास।'

पं. गुरुदत्त ने भी वैसे ही प्रश्न किये थे, तो पं. लेखराम ने भी, जैसे नरेन्द्र (विवेकानन्द) ने स्वामी रामकृष्ण परमहंस से किये थे।

महर्षि का रंग (जादू) इतना चढ़ा कि दयानन्द के रंग में रंग गया मुंशीराम। फिर महात्मा मुंशीराम कहे जाने लगे। मेरा रंग दे वसन्ती चोला। संन्यास लेने से पूर्व सर्वस्व समर्पण कर दिया, वंश क्रम से।

गुरुकुल कांगड़ी (वर्तमान) की स्थापना हुई थी दान में मिली कांगड़ी ग्राम के निकट भूमि में, जिसे अब पुण्यस्थली कहते हैं। चारों ओर गंगा से घिर जाने के कारण ही इसे वर्तमान स्थान पर लाये थे स्वामी श्रद्धानन्द महाराज।

राष्ट्रभक्ति के रंग में रंगे, तो हिन्दू मुस्लिम एकता के नेता कहलाये। दिल्ली की जामा मस्जिद पर वेदमंत्रों से शुरू किया भाषण, तो समाप्ति भी वेद मंत्र से। आज तक किसी को यह श्रेय प्राप्त न हुआ। ऐसे थे वेद के श्रद्धालु श्रद्धानन्द।

चाँदनी चौक (जहाँ स्वामी श्रद्धानन्द की प्रतिमा लगी) पर स्वतन्त्रता प्राप्ति हेतु शान्त जलूस चल रहा था, तो फौज ने

www.thearyasamaj.org

रोक दिया। तभी आगे बढ़ कर कहा : 'क्यों रोका गया, जबकि हम पूर्ण शान्ति से चल रहे हैं?' एक गोरखे ने बन्दूक की नोक पर लगी किरच स्वामी जी की छाती पर तान कर कहा : 'आगे नहीं।'

छाती खोल कर कड़कती बोली से बोले : 'मारो गोलियाँ; किरच घुसा दो। हम रुकेंगे नहीं, आगे जायेगें शान्ति से।' अद्भुत दृश्य देख दूर से अंग्रेज अफसर घोड़े से पहुँचा, वीर की वीरता से प्रभावित होकर कहा: 'जलूस को जाने दो।'

जय बोलो श्रद्धानन्द की!

–श्री सुभाषचन्द्र गुप्त

आओ भारत वालो, मिल जय बोलो श्रद्धानन्द की।
यह नारा है विश्व प्रेम का, यह वाणी आनन्द की।
अंग्रेजों का स्वप्न महल था किसने चकनाचूर किया?
दीन दासता के भीषण भय को था किसने दूर किया?
किसने वैदिक संस्कृति का आलोक पुनः दिखलाया था?
प्रिय स्वराज्य का घोष दयानन्द का किसने दुहराया था?
दयानन्द के शूरवीर, जय बोलो, श्रद्धानन्द की।
कह अछूत हमने ठुकराये अपने ही प्यारे भाई।
लुटती जाति देख श्रद्धानन्द की आँखें भर आई।
चक्र सुदर्शन पतित शुद्धि का तब निर्भीक चलाया था।
बिछुड़े भ्राताओं को फिर से अपने गले लगाया था
देश, जाति के संरक्षक, जय बोलो श्रद्धानन्द की।
वेद सुधा पी, और पिला कर हर मानव में प्रेम भरा।
अपना त्याग सभी कुछ, सबमें 'इदं न मम' का भाव भरा।
जामा मस्जिद में भी जा कर प्रेमपूर्ण उपदेश दिया।
ईसा भक्तों के मन में ईसा की भाँति प्रवेश किया।
प्राणिमात्र के हितचिन्तक, जय बोलो श्रद्धानन्द की।
रोती मानवता के आँसू कौन पोंछने आयेगा?
बन कर श्रद्धानन्द कौन फिर सब पाखंड मिटायेगा?
भ्रष्टाचार, मिलावट, रिश्वत से दूषित इन्सानों को
शुद्ध करेगा कौन हरा कर धूर्त कुटिल शैतानों को?
परमोद्धारक संन्यासी, जय बोलो श्रद्धानन्द की।

159, ए.जी.सी.आर. ऐन्क्लेव, दिल्ली–110092

www.thearyasamaj.org

अंधकार में प्रकाश पुंज

–सुनीति

स्वामी श्रद्धानन्द आर्यसमाज के शलाका पुरुषों में से एक थे। वे भारत का गौरव बढ़ाने वाली गुरुकुल कांगड़ी जैसी महान संस्था के जन्मदाता थे। जन्म से आपको पौराणिक संस्कार अपने पिता से विरासत में मिले थे। पर साथ ही प्रखर बुद्धि और तर्क शक्ति भी मिली थी। इसलिए ये किसी भी विचार को आँखें मूँदकर स्वीकार नहीं करते थे। बुद्धि से विचार करके तर्क करते, जब तक मन को पूरी तसल्ली नहीं होती, तब तक वे सत्यासत्य की खोज में लगे रहते थे।

इनके पिता जी राम के भी भक्त थे। प्रतिदिन गंगास्नान, मन्दिर में जाना, रामायण का पाठ, आदि करते रहते थे। सवेरे जल्दी उठना, पैदल घूमना, कुश्ती लड़ना, मुंशीराम को भी बहुत अच्छा लगता था। इन्होंने इन चीजों को अपने जीवन का अंग बना लिया था। वे प्रतिदिन सवेरे और शाम विश्वनाथ के मन्दिर में जाकर मूर्ति के दर्शन करते, तब खाना खाते थे। एक दिन की बात है कि शाम को आठ बजे ये मन्दिर में दर्शनों के लिए आये तो द्वार बन्द था। पता चला कि "रीवा की रानी दर्शन कर रही हैं। जब वे दर्शन करके चली जायेंगी तब सबके लिए द्वार खुलेगा। इनको इस बात से बड़ी चोट लगी। बालक मूलशंकर के हृदय में शिवलिंग पर चढ़ी मिठाई चूहे को खाते देखकर चोट लगी थी, जिज्ञासा जागी थी कि यह कैसा ईश्वर है जो अपनी ही रक्षा नहीं कर सकता तो यह हमारी रक्षा क्या करेगा? इधर मुंशीराम जी के हृदय में द्वन्द्व मचा कि क्या यह जगत्पिता का दरबार है? जहाँ रानी और प्रजा का भेदभाव है? सुना है परमात्मा के लिए सब समान हैं। न वहाँ कोई अमीर है न गरीब, न कोई राजा है न रंक। न कोई छोटा न बड़ा जग में सब हैं एक समान। उनकी आँखों से अश्रुओं की धारा प्रवाहित होने लगी। अन्दर का असत्य और ऊहापोह सब गलकर बह जाना चाहता था। सत्य के आने के लिए, सत्य के प्रवेश के लिए मार्ग निरन्तर उद्घाटित होना चाहता है। नहीं, अब मैं जाऊँगा ही

www.thearyasamaj.org

नहीं, ऐसे पक्षपाती भगवान् के दर्शन के लिए। मंदिर जाना बन्द हो गया। गंगास्नान और कुश्ती आदि व्यायाम होता रहा। स्कूल के प्रिंसिपल का नाम था पादरी ल्यूपोल्ट। एक दिन उन्होंने अपनी शंका उन्हें सुनाई। पादरी साहब मन ही मन बड़े प्रसन्न हुए। उन्होंने सोचा इसे कलीसिया समझा दूँ तो यह आसानी से पादरी बन जायेगा। यह ठीक है कि हिन्दू मूर्ति पूजा इन्हें निस्सार लगने लगी है। लेकिन पादरी साहब की दलीलें और तर्क इन्हें और भी थोथे और निस्सार लगे।

मुंशीराम जी को तब एक सज्जन लघु सिद्धान्त कौमुदी पढ़ाते थे। उन्होंने भी संस्कृत के मर्म को नहीं समझा था इसलिए वे इन्हें अच्छी तरह नहीं समझा पाये। बल्कि उन्हें संस्कृत पढ़ने से ही अरुचि हो गई। ये समझने लगे कि संस्कृत बड़ी निस्सार भाषा है।

एक दिन इनकी भेंट एक और पादरी से हुई। वे रोमन कैथोलिक थे। ल्यूपोल्ट की अपेक्षा विनयशील, शान्त और सहिष्णु थे। कुछ दिनों में इनके आचार व्यवहार का इतना गहरा असर मुंशीराम पर पड़ा कि वे इनसे बपतिस्मा लेने को तैयार हो गये। अगर उस वक्त उन्होंने बपतिस्मा ले लिया होता, तो आज आर्य जगत् का क्या भविष्य होता, इसे कौन कह सकता है। पर परमात्मा तो सब कुछ देखता है न। मुंशीराम जी बपतिस्मा का दिन निश्चित करने गये थे। पर वहाँ से ऐसा दृश्य देखकर लौटे कि फिर उन्होंने कभी पलट कर ईसाई धर्म की ओर नहीं देखा।

मुस्लिम मत से तो वह पहले ही असहमत थे। इससे मजहब पर से ही दिल उठ गया और ये पक्के नास्तिक बन गये। इस बीच वे शराब भी पीने लगे पर हृदय ने सदा कहा कि यह तुम ठीक नहीं कर रहे हो। लेकिन पूरी तरह इनका समाधान नहीं हो पाया।

इस बीच मथुरा में भी रहे। इसके बाद इनके पिताजी बरेली चले आये। वे वहाँ के कोतवाल बन गए।

संवत् 1941 में सावन के महीने में स्वामी दयानन्द जी बरेली पधारे। इनकी सभा में किसी प्रकार की गड़बड़ी न होने पाये कोतवाल साहब को ऊपर से यह आज्ञा मिली।

www.thearyasamaj.org

इनके पिताजी ने घर जाकर कहा, बेटा, एक दण्डी स्वामी आये हैं विद्वान् और योगीराज हैं, तुम भी उनका व्याख्यान सुनने चलना। मुंशीराम जी लिखते हैं कि पहले दिन ही उनकी भव्य मूर्ति देखकर और वाणी सुनकर मन में इतना आह्लाद हुआ कि उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। मुंशीराम जी श्रोताओं में सबसे प्रथम पहुँचने वालों में थे और लौटने वालों में सबसे अन्तिम।

पुनर्जन्म, ईश्वरावतार, कर्मफल आदि अनेक प्रसंग उनसे सुने और इनके संशय हटते चले गये। उन्हें सुनने के लिए हाल खचाखच भर जाता था। स्वामी दयानन्द समय के भी बड़े पाबन्द थे। एक बार समय पर सवारी नहीं पहुँची तो पैदल ही चल दिये।

ऋषि दयानन्द जब बोलते थे तो किसी से नहीं घबराते थे। सत्य ही कहते थे। उनके व्याख्यान में पादरी स्काट, मिस्टन एडवड्स कमिश्नर, मिस्टर रीड कलेक्टर भी उपस्थित थे। उन्होंने पौराणिकों की बात कहकर ईसाई लोगों के लिए भी कहा कि वे कुमारी के पुत्र होना बतलाते हैं। कलेक्टर, कमिश्नर के मुँह क्रोध से लाल हो गये। पर उनका भाषण उसी तरह चलता रहा। अगले दिन कमिश्नर साहब ने खजांची को बुला कर कहा, "सख्ती से काम न करें, स्वामीजी से कह दो। हम तो ईसाई हैं, सभ्य हैं पर हिन्दू, मुसलमान भड़क उठे तो मुश्किल हो जायेगी।' खजांची की कहने की हिम्मत न पड़ी। उसने डरते-डरते कहा, "महाराज, अगर सख्ती न की जाये तो क्या हर्ज है।" स्वामीजी ने कहा साहब ने कहा होगा तुम्हारा पंडित कड़ा बोलता है। व्याख्यान बन्द हो जायेंगे तो होने दो। तू सीधा मुझसे कह देता, व्यर्थ ही इतनी भूमिका बनाई।

उस दिन शाम का व्याख्यान और भी जोरदार था। बोले, "लोग कहते हैं सत्य को प्रकट न करो। चक्रवर्ती राजा भी क्यों न अप्रसन्न हो हम तो सत्य ही कहेंगे। यह शरीर तो अनित्य है। इसका नाश किया जा सकता है। पर हमें वह शूरवीर पुरुष दिखाओ जो मेरी आत्मा को नाश करने का दावा करे।"

www.thearyasamaj.org

भक्त स्काट नहीं दिखे। उनके बारे में पूछा तो पता चला वे गिरजे में हैं स्वामी जी गिरजे में पहुँच गये। पादरी स्काट उतर कर उन्हें स्वयं गिरजे की वेदी पर ले गये और उनसे कुछ उपदेश देने का आग्रह किया। उन्होंने बीस मिनट तक मनुष्य पूजा का खंडन किया।

मुंशीराम जी को उन दिनों अपने नास्तिकपने का बहुत अभिमान था। उन्होंने एक दिन ईश्वर अस्तित्व पर आक्षेप कर डाला। पाँच मिनट के प्रश्नोत्तर में ही ये चुप रह गये, बोले, "महाराज, आपकी तर्कना बड़ी तीक्ष्ण है। आपने मुझे चुप तो करा दिया परन्तु यह विश्वास नहीं दिलाया कि परमात्मा का अस्तित्व है।"

तब स्वामी जी ने कहा-परमात्मा पर तुम्हारा विश्वास तब होगा जब भगवान् की कृपा होगी।

नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यः न मेधया न बहुना श्रुतेन।
यमेवैष वृणुते तेन लभ्यस्तस्यैष आत्मा विवृणुते तनुस्वाम्।।

मुंशीराम जी बीमार पड़ गए थे। स्वामी जी बरेली से चले गये। इसके बाद फिर कभी इन्हें ऋषि के दर्शनों का सौभाग्य नहीं मिला। पर पहली बार ही ऋषि की भव्यमूर्ति ने इनके ऊपर जो प्रभाव डाला था वह सतत इनका मार्गदर्शन करता रहा। स्वामी जी के जाने के बाद इन्होंने एक दो बार ब्राह्मसमाज की प्रार्थना सभाओं में हिस्सा लिया था। पुस्तकें भी पढ़ी पर किसी से इनका समाधान नहीं हुआ।

लाहौर जाने के बाद एक बार काशीराम जी ने कुछ पुस्तकें पढ़ने को दीं पर इनकी तसल्ली नहीं हुई। इन्हें पादरी स्काट के साथ दयानन्द जी के शास्त्रार्थ का स्मरण आया। सत्यार्थप्रकाश खरीदने गए। कई घंटों की प्रतीक्षा के बाद इन्हें सत्यार्थप्रकाश मिल गया।

सत्यार्थप्रकाश पुस्तक क्या मिली। सच्चे अर्थों में सत्य का प्रकाश इन्हें मिल गया। जिसने सदा-सदा के लिए इनका जीवन रूपान्तरित कर दिया।

ये समस्त आर्य जाति के सौभाग्य का उदय था।

राजपुर रोड, दिल्ली

www.thearyasamaj.org

दिसंबर में शहीद

(1) पं. रामप्रसाद 'बिस्मिल' (19 दिसम्बर)

–डॉ. अशोक आर्य

जिस भारत में आज हम सुखपूर्वक जीवन व्यतीत कर रहे हैं, इस भारत की गुलामी की बेड़ियाँ काटने के लिए अनेक वीरों और रणधीरों ने अपने जीवन को बलिदान किया। वे हँसते–हँसते फाँसी के फन्दे पर झूल गए या जेलों में सड़ते रहे। अपने आपको आजादी के लिए बलिदान देने वालों में पं. रामप्रसाद 'बिस्मिल' भी एक थे।

पं. रामप्रसाद का जन्म ज्येष्ठ शुक्ल एकादशी सं. 1984 को शाहजहाँपुर के मुरलीधर तिवारी के यहाँ हुआ। वह आरम्भ से ही बुरी संगत में फँसकर बुरी आदतों यथा चोरी, धूम्रपान, भाँग पीना, गन्दे उपन्यास पढ़ना आदि में समय नष्ट करने लगे। पकड़े जाने पर तथा सहपाठी के सुयोग्य मार्गदर्शन से इन गन्दी आदतों से छुटकारा मिला। मुंशी इन्द्रजीत की प्रेरणा से वे आर्यसमाज के साथ जुड़े तथा नियमित आसन–प्राणायाम भी करने लगे। इससे आत्मविश्वास बढ़ा शरीर बलिष्ठ हुआ। आर्य कुमार सभा के माध्यम से बच्चों को देशभक्ति की प्रेरणा दी जाने लगी। इस सभा में युवकों को आत्मरक्षा हेतु शस्त्र चलाना भी सिखाया जाता था। इसके साप्ताहिक अधिवेशनों में वाद–विवाद, भाषण के अतिरिक्त धार्मिक पुस्तकों को पढ़ा जाता था। इसी सभा के माध्यम से उन्होंने अपने प्रायः सभी साथियों को देशभक्त बना लिया। इन्हीं दिनों आर्यसमाज के एक संन्यासी स्वामी रामदेव जी से इनका सम्पर्क हुआ। इन्हीं के मार्गदर्शन में आजादी के दीवाने क्रान्तिकारी युवकों का संगठन बनाया गया, इसमें पं. गेंदालाल दीक्षित उनके सहयोगी व मार्गदर्शक बने। इनमें न केवल बन्दूक इत्यादि चलाना सीखा, अपितु

www.thearyasamaj.org

स्वाधीनता व क्रान्ति सम्बन्धी अनेक पुस्तकें भी पढ़ीं।

क्रान्ति के लिए भारी धन की आवश्यकता थी, जिससे शस्त्र खरीदे जा सकें। इसलिए काकोरी के पास गाड़ी में जा रहा सरकारी खजाना लूटा गया तथा इस पैसे से शस्त्र खरीदकर क्रान्ति की गतिविधियाँ तेज कर दीं। सरकार के लाख यत्न करने पर भी वह न पकड़े जाते, यदि उनमें से ही एक साथी दुष्ट बनवारी लाल देशद्रोही बनकर भेद न खोलता। परिणामस्वरूप केवल एक चन्द्रशेखर आजाद को छोड़कर सभी दस के दस देशभक्त दीवाने पकड़े गये। पुलिस अमानवीय अत्याचार करके भी कुछ उगलवा न सकी। न्याय का ढोंग अवश्य रचा गया तथा पूर्व निर्धारित दण्डस्वरूप फाँसी की सजा सुना दी गई।

जेल में फाँसी की कोठरी में भी वीर बिस्मिल ने अपनी दिनचर्या को बनाए रखा। प्रतिदिन प्रातः उठना, दण्ड-बैठक लगाना, सन्ध्या-हवन करना इत्यादि नियमित दिनचर्या थी। इतना ही नहीं, उन्होंने अपनी आत्मकथा भी उन्हीं दिनों लिख डाली। उनकी यह आत्मकथा है, जो हिन्दी की न केवल श्रेष्ठ आत्मकथाओं में से एक है, बल्कि फाँसी से मात्र तीन दिन पूर्व किस प्रकार जेल से बाहर भेज दी गई, यह विदेशी भी देखकर भोंचक्के रह गए। 19 दिसम्बर 1928 को फाँसी के समय जब अन्तिम इच्छा पूछी गई तो वीर बिस्मिल ने दहाड़ते हुए कहा कि "अंग्रेजी साम्राज्य का नाश हो, यही मेरी अंतिम अभिलाषा है।" वे हँसते हुए स्वयं रस्सी गले में डाल विदा हुए। जाते-जाते भी सन्देश दे गए कि कट-कटकर मरें, फिर भी सन्ध्या-हवन आदि दिनचर्या को न छोड़ें। उनको सच्चे मन से यदि हम याद करना चाहते हैं, तो उनकी अन्तिम इच्छा की पूर्ति के लिए अपने जीवन को यज्ञमय बनाते हुए बुराइयों के नाश के लिए डट जायें।

www.thearyasamaj.org

क्रान्तिकारी अशफाकउल्ला खाँ (29 दिसम्बर)

अशफाकउल्लाह का जन्म 22 अक्टूबर सन् 1900 में शाहजहाँपुर में हुआ था। अशफाकउल्लाह खाँ शाहजहाँपुर के एक रईस पिता के पुत्र थे। वह रामप्रसाद 'बिस्मिल' की देश के लिए मर मिटने की भावना से बहुत प्रभावित थे। अतः उनका रामप्रसाद 'बिस्मिल' से गहरा दोस्ताना हो गया। अशफाक मुसलमान होते हुए भी साम्प्रदायिक भावना से कोसों दूर थे। तभी तो एक बार आर्यसमाज की मुसलमानों के आक्रमण से रक्षा करते हुए उन्होंने कहा था "मंदिर और मस्जिद" दोनों मालिक की इबादत करने के पवित्र स्थान है। फिर उनमें आपस में बैर कैसा?" 'हिन्दुस्तान रिपब्लिकन ऐसोसिएशन' क्रान्तिकारी दल ने निश्चय किया कि क्रांतिकारी गतिविधियों के संचालन हेतु धन भी सरकार से ही प्राप्त किया जाए। अतः 9 अगस्त, 1925 को काकोरी स्टेशन के निकट रेल से सरकारी खजाना लूट लिया गया। खजाना लूटते समय साथियों से सन्दूक नहीं टूटा। तब अशफाक ने कुछ क्षणों में ही सन्दूक तोड़ डाला। अशफाकउल्ला खाँ सरकार व पुलिस से बचकर बिहार चले गए। उसके बाद वह दिल्ली आ गए। यहाँ उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। उन्हें फैजाबाद जेल में रखा गया। इन्हें मुकद्दमें में फाँसी की सजा सुनाई गई। फाँसी की सजा सुनने के बाद भी उनकी मस्ती देखने लायक थी। फाँसी से पूर्व इनके दोस्त जेल में उनसे मिलने आये। यह सज-सँवर कर दोस्तों के सामने पहुँचे और बोले, "कल मेरी शादी है।" 19 दिसम्बर, 1927 को अशफाकउल्ला खाँ ने फैजाबाद जेल में फाँसी का फंदा चूमा। अशफाक एक शायर थे। उनका उपनाम 'हसरत' था। उनकी हसरत भी क्या थी? उन्हीं की शायरी में-

"कुछ आरज़ू नहीं है, है आरज़ू तो यह है।
रख दे कोई ज़रा सी, ख़ाके वतन कफ़न में।।"

www.thearyasamaj.org

क्रान्तिकारी गेंदालाल (20 दिसम्बर)

पंडित गेंदालाल दीक्षित का जन्म आगरा जिले के मई गाँव में 30 नवम्बर, 1890 को हुआ था। गेंदालाल जी ने देश की आजादी के लिए निश्चय किया कि ब्रिटिश सरकार से सशस्त्र संघर्ष करना होगा। अतः इन्होंने पहले 'शिवाजी समिति' और बाद में 'मातृदेवी' संस्थाओं का गठन किया। गेंदालाल दीक्षित ने एक बार एक सज्जन के माध्यम से चम्बल के डाकुओं से सम्पर्क किया। उन्हें डकैती की धारा से मोड़ कर देश की आजादी की खातिर शस्त्र उठाने के लिए प्रेरित किया गया। उन्हीं के सम्पर्क से वह ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध जबरदस्त टक्कर की योजना बना रहे थे। तभी किसी मुखबिर ने पुलिस को सूचना दे दी। पुलिस से भारी टक्कर से इनके 35 क्रान्तिवीर वीरगति को प्राप्त हुए। 45 गिरफ्तार कर लिए गए। रामप्रसाद बिस्मिल ने इन्हें जेल से छुड़ाने की योजना बनाई। लेकिन इस योजना का भी पुलिस को पता चल गया। पुलिस को गेंदालाल के पीछे किसी बड़े गिरोह की जानकारी थी। अतः उन्हें ग्वालियर से मैनपुरी जेल भेज दिया गया। यहाँ कुपोषण और गंदे वातावरण के कारण उन्हें तपेदिक की बीमारी लग गई। एक दिन दीवार फाँद कर वह जेल से भाग निकले। और कोटा आ गये। यहाँ इनके मित्र रामनारायण ने इन्हें धोखा दिया। रात को धर्मशाला के एक कमरे में रामनारायण इनका सारा सामान लेकर चम्पत हो गया। कमरे के बाहर ताला डाल गया। ये तीन दिन बाद कमरे के बाहर आ सके। बीमारी की अवस्था में घर पहुँचे तो इनके पिता व घर वालों ने पुलिस के डर से घर में रखने से मना कर दिया। आखिर बीमार शरीर से पुलिस को चकमा देते हुए दिल्ली आकर एक प्याऊ पर पानी पिलाने का काम करने लगे, लेकिन इनकी दशा बिगड़ गई। अन्तिम समय इनकी पत्नी दिल्ली आ गयीं। 20 दिसम्बर,1920 को दिल्ली के सिविल अस्पताल में इस क्रांतिकारी का निधन हो गया।

www.thearyasamaj.org

खुदीराम बोस (जन्मदिवस 03 दिसम्बर)

खुदीराम बोस का जन्म 3 दिसम्बर, 1889 को मिदनापुर जिले के मोहबनी गाँव में त्रिलोक्यनाथ के पुत्र के रूप में हुआ। छः वर्ष की आयु में ही माता पिता का निधन हो गया। बहिन ने उन्हें पाला। 1905 में बंगाल विभाजन की घटना से प्रभावित होकर खुदीराम बोस ने विद्यालय छोड़ दिया एवं अंग्रेजी शासन के विरुद्ध क्रान्ति की राह पकड़ ली। 28 फरवरी, 1906 को 'सोनार बंगला' एवं 'नो कम्प्रोमाइज' पुस्तकें मुफ्त बाँटते हुए वे पकड़े गए परन्तु पुलिस दल को गच्चा देकर भाग निकले। यह दोनों पुस्तकें अरविंद घोष की थीं। इनमें ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध क्रांति का सन्देश था। 1907 में हाटगेछा के पास सरकारी खजाना लूट लिया। कोलकाता के चीफ प्रेसीडेंसी मजिस्ट्रेट किंग्स फोर्ड के अत्याचारों से बंगाल के देशभक्त क्रांतिवीर परेशान थे। क्रांतिवीरों ने उसकी हत्या की योजना बना ली। डर कर उसने अपना स्थानान्तरण मुजफ्फरपुर करा लिया। क्रांतिवीरों ने उसकी हत्या का दायित्व खुदीराम बोस और प्रफुल्ल चाकी को सौंपा। 30 अप्रैल, 1908 को दोनों क्रांतिवीरों ने एक लाल बग्घी को किंग्स फोर्ड की समझ उस पर बम फेंका। लेकिन वह बग्घी केनेडी परिवार की थी। जिसमें कैनेडी व उनकी दोनों पुत्रियाँ मारी गई। दोनों क्रांतिवीर अलग-अलग दिशाओं में भागे। खुदीराम बोस बैनी रेलवे स्टेशन पर पकड़े गये। 11 अगस्त, 1908 को केवल 19 वर्ष की आयु में ही गीता हाथों में लेकर फाँसी का फंदा चूमकर शहीद हो गये।

मेकाघाट पर प्रफुल्ल कुमार चाकी भी पकड़े गये। लेकिन उन्होंने अपनी रिवाल्वर से ही आत्म-बलिदान कर लिया। एक सिपाही नन्दलाल बनर्जी पहचान कराने हेतु उनका सर काट कर मुजफ्फरपुर ले आया। इस सिपाही को इस कुकृत्य के लिए अंग्रेजों ने पुरस्कृत किया। बाद में क्रांतिवीरों ने उसके इस कुकृत्य पर उसका वध कर उसे यमलोक पहुँचा दिया।

www.thearyasamaj.org

ऊधमसिंह (जन्मदिवस 26 दिसम्बर)

ऊधमसिंह का जन्म 26 दिसम्बर, 1899 को सुनाम, संगरुर (पंजाब) में सरदार दहलसिंह के पुत्र के रूप में काम्बोज परिवार में हुआ था। माता-पिता का सर से साया उठ जाने के बाद ऊधमसिंह का बचपन अनाथालय में बीता। जलियाँवाला बाग के नृशंस हत्याकाण्ड से वीर ऊधमसिंह का हृदय चीत्कार कर उठा। इस वीर ने हत्या काण्ड के जिम्मेदार ब्रिगेडियर रेजिनाल्ड एडवर्ड हैरी डायर को मारने का प्रण कर लिया। सरकार को उन पर संदेह हो गया अतः उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। 4 वर्ष के कारावास के बाद वे मुक्त हुए। अब उन्होंने अपना नाम बदल कर 'राम मुहम्मद सिंह' रख लिया जोकि हिन्दू-मुस्लिम-सिख एकता का प्रतीक था। डायर से प्रतिशोध की ज्वाला में धधकते हुए वो अवसर की तलाश में रहने लगा। जब उसे पता चला कि हैरी डायर 8 वर्ष की लम्बी बीमारी के बाद लन्दन में मर गया तब उन्होंने पंजाब के तत्कालीन गवर्नर सर माइकेल ओ' डायर को मारने का फैसला किया। 1939 में वे इंग्लैण्ड पहुँच गये। यहाँ उन्होंने माइकेल ओ' डायर की गतिविधियों पर कड़ी नज़र रखी। 13 मार्च, 1940 को इंग्लैण्ड के कैक्स्टन हाल में ईस्ट इंडिया एसोसिएशन की सभा थी। उसी सभा में ऊधमसिंह ने माइकेल ओ' डायर को गोलियों से भून दिया। वे भागते उससे पहले ही एक अंग्रेज महिला ने उनका रास्ता रोक लिया। ऊधमसिंह बोले "महिलाओं और बालकों पर गोलियाँ अंग्रेज चलाते हैं भारतीय नहीं" और रिवाल्वर फेंक कर गिरफ्तार हो गये वह अंग्रेज महिला ऊधमसिंह के आदर्शों की भक्त बन चुकी थी। उसने ऊधमसिंह को फाँसी से बचाने का भरसक प्रयास किया। लेकिन 31 जुलाई, 1940 को ऊधमसिंह को फाँसी दे दी गई। 20 वर्ष, ग्यारह माह बाद प्रतिशोध की ज्वाला ठंडी कर फाँसी का फंदा चूमते हुए ऊधमसिंह बहुत प्रसन्न थे।

www.thearyasamaj.org

Hesitations Of History

-M.K. Rasgotra

In his landmark speech to a joint session of US Congress, Prime Minister Narendra Modi declared that the india-US relationship had overcome the hesitations of history. Meanwhile, former foreign secretary M.K. Rasgotra has provided a tantalising glimpse into what might have been if those hesitations of history had been overcome, say, half of century earlier. Among other things, India would not have needed to beat desperately at the doors of the Nuclear Suppliers Group today.

According to Rasgotra, US President John F Kennedy offered to help India detonate a nuclear device much before China did in 1964. But Indian PM Jawaharlal Nehru refused the offer. Rasgotra's claim looks to me an entirely credible one.

Kennedy was one of the most pro India of US presidents who sought to empower democratic India vis-a-vis-Maoist China, which he saw as a grave danger to the free world (the US seeks to assist India's rise for similar strategic reasons today, to ensure China doesn't call all the shots in Asia and to keep sea lanes open).

Nehru, on the other hand, was enough of a pacifist to be vehemently against nuclear tests and nuclear weapons. He had fought the British to win Indian independence, and the UK and US were close allies (although Roosevelt did strongly intercede with Churchil to push Indian independence).

Nehru was also imbued with the pan-Asianism that was part and parcel of Indian nationalism-which saw Asian countries, paticularly China, in a favourable light vis-a-vis 'imperialist' Western powers. For all those reasons. Nehru would cetainly have rejected nuclear assistance from Kennedy if it had been offered.

www.thearyasamaj.org

Only Nehru's sentimental view of China can account for perhaps his craziest foreign policy move : the big powers offered India permanent membership of the UN Security Council virtually on a platter, but Nehru declined it in favour of China. That may have been the primal act of Indian diffidence which set the tone for its foreign policy.

But history would have been different if Nehru had accepted Kennedy's assistance and India detonated a nuclear device before October 1962. That would not only have broken with the psychology of diffidence; it would have deterred the Chinese attack and the 1962 war. The thrashing India took in that was psyched it into a permanent appeasement/avoidance syndrome with respect to China, which has impaired India-China relationship since.

The 1962 pummelling also encouraged Pakistan's military adventurism against India in 1965, in an attempt to seize Kashmir. If the 1962 war with China hadn't happened, the 1965 war with Pakistan could have been headed off as well. Kashmir would have seemed unattainable to Pakistan and eventually ceased to be an issue between the two countries.

Sceptical that India's pssession of a nuclear device would have deterred Maoist China? In that case, consider another counter-factual. In April 1960 Zhou Enlai visited New Delhi as Mao's emissary and obliquely proposed an east-west swap. If India recognised China's claim over the Aksai Chin. China was willing to concede India claims in the eastern Himalaya. India would have lost nothing from such a settlement; Aksai Chin is an uninhabitated, mountainous area where as Nehru said, "not a blade of grass grows".

Nehru hesitated to accept Zhou's proposal. Relations between the two countries soured and eventualy fell off the precipice. But what if Nehru had accepted and the India-China boundary settled on a pragmatic basis? In that case,

www.thearyasamaj.org

again, the 1962 war would have been forestalled.
India could have used American technology, capital and access to markets to build itself up, in the days when America was still generous with these things (perhaps due to Cold War reasons; Donald Trump's crabby outlook wasn't the norm then). With the border issue settled, relations with China would have been far better and India would have been in the right side of both the US and China.
What happened, instead, was that Pakistan managed to play both the US and China to diplomatically outmanoeuvre India for a long time. That ended with Pakistan's military adventurism during the 1999 Kargil war, which convinced the US (though not China) that the Pakistani posture is a fundamentally dangerous and irresponsible one. However, Pakistan has strategically used 9/11 to claw back some US favour.
Asian countries with close relationships to the US opened up their economies in the 1970s, enabling them to boom. Had India done the same it would have remained abreast with China, instead of falling behind till it's become, today, only a tiny blip in Beijing's rear view mirror. Eventually, Pakistan too would have given up its existential emmity with India and thrown in its hat to join the South Asian boom.
A clarification is in ordier: Nehru was one of India's greatest 20th century statesman and it's worth nobody's while demeaning him (least of all by anyone who deems himself a 'patriot'). Nehru more than anybody else-is responsible for institutionalising democracy in India when he could easily have been a dictator. That is why Kennedy admired him; that is why we have democracy in India today.
Given India's size and diversity dictatorship is a recipe for disintegration; democracy is the only guarantee of a stable polity. If India had disintegrated, none of the above counter-factor-factuals could have materialised. Nehru's achievement stands out and dwarfs all his failures.

www.thearyasamaj.org

A man (A.B. Vajpayee) of few words who mesmerised all

-*Vinod Sharma*

"Kya chal raha hai partner, asked Atal Bihari Vajpayee, seeking me out from a crowd of journalists at Lahore's Minar-e-Pakistan on February21,1999. He knew of my stint as HT's Pakistan correspondent and was keen perhaps to know how his State visit, the last since by an Indian PM, was playing out in that country.

I wasn't sure until his helicopter landed at Iqbal park that the PM of "akhand bharat" (read BJP) party would visit the memorial to the Muslim League's 1940 call for a separate homeland. "It's a miracle, sir," I gushed. "If that's the message to zara tafseel se kahein (say it in some detail). Pakistanis always ask what purpose will be served ask what purpose will do not recognise their wajood (existance) as a sovereign nation".

Now ailing, Vajpayee used to be a man of few words, unless on his feet in Parliament or while holding multitudes in thrall at rallies.

But on the plush lawns of the West Punjab Governor's residence that evening, the BJP veteran surpassed himself-as an orator and a statesman. To me, he shone like a Ratna, Bharat Ratna that day itself.

Paradigm Shift

The right wing, anti-India, Jamaat-e-Islami later had the Minar washed with rosewater in what it termed the memorial's 'ablution' after Vajpayee set foot there. That did not erase, however, from popular mind the impression Vajpayee made by his bold acceptance of Pakistan's reality. In paradigm terms, it was a shift bigger than L.K.Advani's endorsement of Jinnah's 'secular' beliefs.

Pakistan betrayed the Lahore peace process in Kargil. But Vajpayee persisted with his hand of friendship, inviting Kargil mastermind Pervez Musharraf to Agra in 2001. It wasn't for want of his efforts that the summit ended on a lunatic note.

www.thearyasamaj.org

The madness flowed from Musharraf's megalomania and to some extent the internal BJP contradictions.
What followed was a near war scenerio after the December 2001 terrorists attack on Parliament. Two years down the line, a high profile visit to Pakistan by Indian parliamentarians afforded another opening for peace. Vajpayee seized it with alacrity, making Musharraf commit in January 2004 to non use of his country's territory by terrorists perpetuating violence against India. Mumbai's 26/11 made a mockery of the Pakistani promise. But history must judge Vajpayee by what he achieved against odds-at home and in the neighbourhood.
Post-Script
I once asked a BJP leader to read to recall one action or policy for which posterity should remember Vajpayee. He agreed wholeheartedly when reminded of his leader's role in ensuring the secular character of the 1984 vote after Indira Gandhi's assassination. Vajpayee, then BJP president, reached out admirably to the sikh community denouncing at public rallies in the aftermath of Indira's murder.
The hugely polarised vote saw the BJP (with two seats) getting reduced to a rump in the Lok Sabha. KC Pant joined it in subsequent years. But when asked after winning the New Delhi after winning the New Delhi seat on a Congress ticket in 1984 whether he won on a secular vote, he tamely argued : "I received support from all sections."
The Bharat Ratna conferred on Vajpayee is richly deserved. He's the BJP's Nehru --acceptable to even those who disagree with the ideology of his party or the broader political parivar.

www.thearyasamaj.org

Date of Pubn. : 30.11.2016 Posted at - NIE - H.O. Postal Date : 2-3 Dec. 2016
RNI Reg. No. DELBIL/2007/22062 Postal Regd. No. DL(W) 10/2143/2014-2016

गणनां त्वा गणपतिं हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिं हवामहे निधीनां त्वा निधि पतिं हवामहे वसो मम। अहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्।। यजु.23/11

ऋषि- प्रजापतिः, देवता-गणपतिः, छन्द-शक्वरी

अर्थ-हे प्रभो! गणों के स्वामी के रूप हम आपकी उपासना करते हैं। हे जगदीश्वर! अतिप्रियों के पालनकर्ता के रूप में हम आपको स्वीकार करते हैं। हे परमात्मन्! निधियों के संरक्षण के रूप में हम आपकी प्रशंसा करते हैं। हे वसो सबके हृदयों में बसने वाले प्रभो! आप मेरे (न्यायाधीश) हैं। हे परमेश्वर (गर्भधम्) गर्भ के समान संसार को धारण करने वाली जिस प्रकृति को आप (आ+अजासि) भली प्रकार प्राप्त हो रहे हैं उस (गर्भधम्) प्रकृति के धर्ता आपको मैं (आ+अजानि) अच्छी तरह से जानूँ।

Oh God Almightly, we call You (Ganapati) the Master of our hosts; we call You (Priyapati) the Protector of all that is dear to us. We call You (Nidhipati) the Custodian of treasures. Oh (Vaso) Sustainer of all, You are my only hope in life May I fully know You the Sustainer of Primordial energy and thus be able to cast away the evil effects which force souls to be reborn.